8th class sanskrit notes | रघुदासस्य लोकबुद्धिः रघुदास की लोकबुद्धि

पाठ 6 – रघुदासस्य लोकबुद्धिः

रघुदासस्य लोकबुद्धिः (रघुदास की लोकबुद्धि)

(लट् लकार)

[प्रस्तुत पाठ में एक .....पड़ते जा रहे हैं । अस्ति रामभद्र नामकं ..... कदापि कष्टं नानुभवति ।

अर्थ – रामभद्र नामक सम्पन्न एक नगर है । वहाँ बहुत लोग अपने – अपने गाँवों को छोड़कर शहर में रहने के लिए परिवार के साथ आये । नगर में अनेक सुविधाएँ हैं इसमें संदेह नहीं । किन्तु नगर के नियम ग्रामीण लोगों को पीड़ा पहुँचाते हैं । वहाँ हरि प्रसाद का एक ग्रामीण परिवार रहता है । उसका पड़ोसी रघुदास अपने परिवार के साथ सुख से रहता है । रघुदास का पुत्र बिन्दु प्रकाश बहुत मेघावी है । स्कूल में सदैव वर्ग में प्रथम आता है । आजकल शहर के कॉलेज में पढ़ रहा है । बिन्दु प्रकाश के माता – पिता अपने संतान की उन्नति को देखकर प्रसन्न रहते हैं । छोटा परिवार के कारण अधिक सम्पन्न नहीं होने के बाद भी रघुदास शहर में सुखी है । कभी – कभी उसके घर गाँव से लोग आकर रहते हैं । किन्तु उसके परिवार के लोग कभी कष्ट का अनुभव नहीं करता है ।

अपरत्त प्रतिवेशिनः .....चर्चा ते कुर्वन्ति ।

अर्थ – वहीं पर पड़ोसी हरि प्रसाद के परिवार की कहानी विचित्र है । उसके परिवार में छ : बेटी और दो बेटे हैं । उन सबों के भरण – पोषण करने में सम्पन्न होकर भी हरि प्रसाद सदैव चिन्तित रहता है । लड़कियों में तीन ही स्कूल जाती है । अन्य तीन लड़कियाँ मैट्रिक परीक्षा पास कर घर में ही रहती है । हरि प्रसाद सदैव चिन्तित रहते हैं कि अधिक पढ़ाने से उन सबों के विवाह में बड़ी समस्या होगी । घर में रहने वाली वे सब बेटियाँ घर के कामों को करती हैं किन्तु सदैव परस्पर झगड़ा करती हैं । हरि प्रसाद के दोनों पुत्र स्कूल में पढ़ते हैं किन्तु उन दोनों की महत्वाकांक्षा सदैव पिता को पीड़ा पहुँचाता है । माता भी उन्हीं दोनों को अधिक मानती है । यह देखकर सभी लड़कियाँ बहुत दुःखी होती हैं । इस प्रकार सम्पन्न हरि प्रसाद पड़ोसी निर्धन रघुदास की प्रसन्नता के लिए ईर्ष्या करते हैं । हरि प्रसाद के विशाल घर में भी आये हुए उसके ग्रामीण लोग प्रसन्न नहीं रहते हैं । इस परिवार की दु : ख की चर्चा वे लोग करते हैं ।

अन्ततः हरि प्रसाद स्वकीयं..... सत्यमुच्यते ।

अर्थ -अन्तत : हरिप्रसाद अपने ही विशाल परिवार की सदैव निन्दा करते दिखते हैं । रघुदास के छोटा परिवार अच्छा है विशाल परिवार के पिता मुझे धिक्कार है । वर्तमान में वही लोग धन्य हैं जिस व्यक्ति का परिवार छोटा है । सत्य ही कहा गया है कि-

परिवारस्य सौभाग्यं यत्र संख्या लघीयसी ।
विशाल परिवारस्य भरणे पीडितो जनः ।।

अर्थ – उस परिवार का सौभाग्य है जिस परिवार की संख्या कम है । विशाल परिवार का भरण – पोषण करने में लोग दु : खी होते हैं ।

https://www.evidyarthi.in/

देशेऽपि परिवारेषु जनसंख्यानियन्त्रणात् । संसाधनानि सर्वेषां सुलभान्येव सर्वथा ॥

अर्थ – देश या परिवार में जनसंख्या को नियन्त्रित करने से सदैव सबों को संसाधन आसानी से प्राप्त हो जाते हैं ।

शब्दार्थ –

बहवः = अनेक । परित्यज्य = छोड़कर । सह = साथ । समागताः = आये । प्रतिवेशिनः = पड़ोसी । अधीते = पढ़ता है । विलोक्य = देखकर । प्रमुदितौ = प्रसन्न । यदा – कदा = कभी – कभी । आगत्य = आकर । इदानीम् = इस समय । सम्प्रति = इस समय । तिम्रः = तीन (स्त्रीलिङ्ग) । अपरा : = दूसरी । महती = बहुत । अवलोक्य = देखकर । प्रसीदन्ति = प्रसन्न होते हैं । ईयति = डाह करते हैं । लघीयसी = छोटी (तुलनात्मक) । अल्पकायः = छोटा । सर्वथा = सब प्रकार से । यतसंख्यकः = कम संख्या वाला । भरणे = पालन करने वाला ।

व्याकरणम्
सन्धिविच्छेदः-
सन्तीति = सन्ति + इति (दीर्घ – सन्धिः) । नातिसम्पन्नोऽपि = न + अतिसम्पन्नः + अपि (दीर्घ सन्धिः , विसर्ग सन्धिः) ।
कदापि = कदा + अपि (दीर्घ – सन्धिः) । नानुभवति = न + अनुभवति (दीर्घ – सन्धिः) । प्रवेशिकापरीक्षोत्तीर्णाः = प्रवेशिकापरीक्षा + उत्तीर्णाः (गुण सन्धिः) ।
तदवलोक्य = तत् + अवलोक्य (व्यञ्जन सन्धिः) । विशालेऽपि = विशाले + अपि ।
सदैव = सदा + एव (वृद्धि सन्धिः) ।
तावेव = तौ + एव (अयादि सन्धिः) ।
सर्वाधिकम् = सर्व + अधिकम् (दीर्घ सन्धिः) । सत्यमुच्यते = सत्यम् + उच्यते ।

प्रकृति – प्रत्यय , विभागः

परित्यज्य =परि + √ल्यज् + ल्यप्
समागताः =सम् + आ + √गम् + क्त (बहुवचन) विलोक्य =वि + √लोक + ल्यप्
प्रमुदितौ =प्र + √ मृद् + क्त (पुं , द्विवचन)
आगत्य =आ +√ गम् + ल्यप्
उत्तीर्णा =उत् +तृ +क्त(बहुवचन)
स्थिरताः =√स्था + क्त (बहुवचन)
अवलोक्य =अव+√लोक् + ल्यप्
गच्छन् =√गम्+ शतृ(पुं .)

https://www.evidyarthi.in/